विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

सांस्कृतिक नीति

अगस्त 2021

DIRECTOR
I Q A C
VIKRAM UNIVERSITY,UJJAIN

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

सांस्कृतिक नीति अगस्त 2021

अनुक्रम

1. भूमिका

2.सांस्कृतिक नीति के आधारभूत तत्व

3.प्राथमिकताएं

4.भाषा तथा साहित्य

5.प्राच्य विद्या

6.ललित कलाएं

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

सांस्कृतिक नीति

अगस्त 2021

भूमिका

शिक्षा तथा संस्कृति दोनों ही मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत उपादेय सिद्ध हुए हैं इस दृष्टि से संस्कृति का स्थान तो शिक्षा से भी ऊपर का रहा है संस्कृति मनुष्य को परिपूर्ण बनाती है विश्वविद्यालय शैक्षिक दृष्टि से तो अपने छात्रों को लाभांवित करता ही है साथ ही यदि सांस्कृतिक दृष्टि से भी छात्रों को लाभ मिलता है तो निश्चित रूप से यह समाज के लिए एक अत्यंत उपयोगी पहल होगी यद्यपि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से इस देश की कथा विशेष रूप से इसे क्षेत्र की संस्कृति से परिचित कराने की दृष्टि से समय समय पर आने का प्रयास किए हैं फिर वह विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियां हो युवा उत्सव हो या अन्य विशेष आयोजन किंतु यह सब प्रयास तात्कालिक एवं अस्थाई परिणाम कारक होते हैं स्थाई प्रयास तथा परिणाम कारक कार्य के लिए एक विशेष योजना अत्यंत आवश्यक हो जाती है संस्कृति की दृष्टि से योजना को निश्चित करना अर्थात इस क्षेत्र में एक दूरगामी परिणाम को ध्यान में रखकर एवं स्थाई रूप से संस्कृति के प्रति उत्तर दायित्व के निर्वहन करने जैसा प्रयास होगा इस क्षेत्र की विशेषताओं को ध्यान में रखकर तथा वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करें इस दृष्टि से विश्वविद्यालय द्वारा सांस्कृतिक नीति निर्धारित की गई है समय-समय पर इस नीति में संशोधन आवश्यकतानुसार किया जा सकेगा आशा है की यह नीति परिणाम कारक तथा विद्यार्थियों को एक सुसंस्कृत व्यक्ति बनाने की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी

सांस्कृतिक नीति के आधारभूत तत्व

विक्रम विश्वविद्यालय मालवा प्रांत का प्राचीनतम विश्वविद्यालय है। शिक्षा के क्षेत्र में अति प्राचीन सांदीपनी गुरुकुल के पश्चात क्षेत्र में अनेक गुरुकुलों ने शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान प्रदान किया है, जिसके कारण शस्य श्यामल मालवा का यह प्रदेश भाषा, साहित्य तथा संस्कृति की दृष्टि से भी अत्यंत समुन्नत एवं समृद्ध रहा है । मालवा के क्षेत्र में स्वतंत्र भारत के पश्चात मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रस्थापित विक्रम विश्वविद्यालय प्राचीनतम विश्वविद्यालय हैं तथा अत्यन्त कुशलता के साथ निरंतर कार्यरत है । विश्वविद्यालय द्वारा अभी तक शिक्षा, साहित्य, ग्रंथ संपादन, प्रकाशन शोध आदि के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यह क्रम सतत चलता रहे तथा नीतिगत योजना स्थाई रूप से क्रियान्वित होती रहे, इस दृष्टि से विश्वविद्यालय की यह सांस्कृतिक नीति निश्चित की जा रही है:--

प्रस्तुत सांस्कृतिक नीति

1.यह सांस्कृतिक नीति विश्वविद्यालय के उद्देश्य को पोषित करने वाली होगी।

2.विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को प्रोत्साहन, उनका संरक्षण एवं अन्य सांस्कृतिक समूहों, व्यक्तियों से संवाद-संपर्क के द्वारा ओर अधिक परिपूर्ण किया जाएगा ।

3.सभी उपक्रमों में विश्वविद्यालय द्वारा प्रोत्साहन एवं सहायता प्रदान की जाएगी।

4.विश्व विद्यालय परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले समस्त घटकों को इसका लाभ मिलेगा।

5.मालवा संस्कृति की गौरवशाली परंपरा तथा जीवनमूल्यों को संरक्षण तथा प्रोत्साहन इस नीति के द्वारा प्राप्त हो सकेगा।

6. केवल प्रक्रिया अथवा नियमों पर निर्भर रहते हुए वर्तमान की आवश्यकता, सामाजिक विकास एवं अपेक्षित परिवर्तन को साध्य करने वाली यह नीति होगी।

7. राज्य शासन द्वारा वर्तमान में संचालित सांस्कृतिक दृष्टि के उपक्रमों को ओर अधिक प्रभावी और परिणाम कारक संचालित करने की दृष्टि से उपयोगी होगी।

8. सांस्कृतिक नीति का क्रियान्वयन क्रमानुसार तथा मूल्यांकन के साथ किया जा सकेगा।

प्राथमिकताऐं

प्रस्तुत सांस्कृतिक नीति के अंतर्गत सभी बिन्दु अत्यंत महत्व के है, कुछ बिन्दुओं को प्राथमिकता के आधार पर कार्यान्वित करना होगा। समग्र संस्कृति की योजना संपूर्ण कार्य क्षमता के साथ क्रियान्वित होगी, फिर भी प्राथमिकता के आधार पर जिन कार्यों को संपन करना है वे इस प्रकार हैं:-

1. सांस्कृतिक कार्यों के लिए विश्वविद्यालय के बजट में समुचित प्रावधान।

2. विश्वविद्यालय इस कार्य के लिए अर्थात् सांस्कृतिक नीति को क्रियान्वित करने के लिए एक सांस्कृतिक निधि को स्थापित करेगा, जिसके कारण सांस्कृतिक गतिविधियों को आर्थिक संकट का सामना न करना पड़े।

3. सांस्कृतिक नीति के अंतर्गत भाषा, साहित्य कलाओं की गतिविधियों के लिए एक सांस्कृतिक भवन का निर्माण किया जा सकेगा। जहाँ पर इन गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जा सके।

4. भाषा तथा साहित्य, संस्कृति एवं पांडुलिपियों की दृष्टि से एक सलाहकार समिति की स्थापना की जा सकेगी, जो समय-समय पर भाषा साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की नीति को अद्यतन करने का कार्य करेगी।

5. मालवा क्षेत्र की कुछ विद्यायें तथा कुछ कलाएं अत्यंत प्राचीन और इस क्षेत्र की पहचान है ऐसी विद्याओं और कलाओं को संरक्षित कर उन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाएगा।

6. मालवी बोली तथा निमाड़ी बोली के लिए प्रामाणिक कोष तैयार किया जा सकेगा, जिसके आधार पर इस बोलियों को समृद्ध तथा व्यापक बनाया जा सकेगा।

7. विश्वविद्यालय द्वारा राज्य शासन को यह प्रस्ताव दिया जायेगा कि मालवी तथा निमाड़ी बोली अकादमी की स्थापना की जाए जिसके अंतर्गत मालवी और निमाड़ी बोली के साथ अन्य बोलियों के विकास के लिए कार्य किया जा सके।

8. विश्वविद्यालय स्तर पर एक सांस्कृतिक समन्वय समिति का गठन किया जा सकेगा, जो विश्वविद्यालय एवं अन्य सांस्कृतिक समूहों, संस्थाओ, व्यक्तियों के बीच समन्वय का कार्य करेगा ।

<u>भाषा तथा साहित्य</u>

भाषा किसी भी संस्कृति साहित्य तथा ज्ञान के संक्रमण तथा प्रदर्शन का उत्कृष्ट माध्यम होती है। संस्कृति से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी भाषा के ही माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित हो पाती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत सांस्कृतिक नीति के अंतर्गत निम्नानुसार कार्य संपन्न किए जा सकते हैं।

कोष निर्मिति :- मालवा और निमाड़ क्षेत्र आदिवासी बहुल है अतः इस दृष्टि से आदिवासी और मालवी से संबंधित, त्यौहार, जमाते, मेले, यात्राएं ग्रामीण जीवन आदि की समुचित तथा प्राथमिक जानकारी प्राप्त हो सके इस दृष्टि से एक वृहद् कोष की निर्मिती की जा सकती है।

इस क्षेत्र में रचे गए विभिन्न ग्रंथों के विशेषकर दुर्लभ ग्रंथों के प्रकाशन की योजना क्रियान्वित की जा सकती है ।

मालवी निमाड़ी तथा हिंदी साहित्य के साथ ही संस्कृत एवं प्राकृत से संबंधित ग्रंथों को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से ग्रन्थोत्सव में पुरस्कार हिंदी भाषी अथवा अहिन्दी भाषी साहित्यकारों को पुरस्कार / प्रोत्साहन आदि की योजना संचालित की जा सकती है।

मालवा का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है तथा पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है इस दृष्टि से विशेष की जानकारी देने वाली पुस्तिका का प्रकाशन भी किया जा सकता है।

<u>प्राच्य विद्या</u>

इसके अंतर्गत मालवा की प्रागैतिहासिक संस्कृति का अध्ययन तथा पाषाण एवं ताम्रयुगीन संस्कृति का अध्ययन किया जावेगा । पुरातत्व की दृष्टि से उत्खनन आदि की प्राचीनतम पद्धतियों तथा उपकरणों से संबंधित कार्यों को प्रोत्साहन आदि दिया जा सकेगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से मालवा में सम्राट विक्रमादित्य महाराजा भोज तथा देवी अहिल्याबाई होल्कर आदि शासकों का कार्यकाल रहा है। इनके कार्यकाल में प्रचलित विविध वैज्ञानिक पद्धतियों एवं उपकरणों से संबंधित जानकारियां उपलब्ध है। ऐसी जानकारियों को सार्वजनिक बनाया जा सकेगा।

एक वस्तुसंग्रहालय की निर्मिति की जा सकती है। इसके अंतर्गत इस क्षेत्र में प्रचलित पुरातन वस्तुओं को संग्रह किया जा सकेगा ।

इस क्षेत्र में मोडी तथा ब्राह्मी लिपी प्रचलन में थी। इन लिपियों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से प्रोत्साहन प्रशिक्षण तथा लिपियों में लिखी गयी पांडुलिपियों का संकलन आदि कार्य इसके अंतर्गत किया जा सकेगा।

मालवा के क्षेत्र में अनेक प्राचीन पांडुलिपियां विद्यमान है उनके संरक्षण की कार्यशालायें, संवर्धन संपादन अदि का कार्य किया जा सकेगा।

उक्त कार्य की दृष्टि से संस्कृत पाली तथा प्राकृत के अध्ययन को भी प्रोत्साहन दिया जा सकेगा।

<u>ललित कलाएं</u>

मालवा का क्षेत्र कला की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है यहां के गीत नृत्य शिल्प चित्रकारी आदि संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है इस दृष्टि से सांस्कृतिक नीति के अंतर्गत लोक संगीत लोक नृत्य चित्रकला आदि को प्रोत्साहित करने के साथ ही इनका संवर्धन करना होगा

ललित कलाएं आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित हो सके इस दृष्टि से कला शिक्षण की एक योजना को क्रियान्वित किया जा सकेगा जिसके अंतर्गत लघु कालावधी के प्रमाण पत्र पत्र उपाधि पाठ्यक्रम संचालित किए जा सकेंगे

लोक कला को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से लोक कला का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शिष्यवृत्ती भी दी जा सकती है

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले प्रसिद्ध मेवाती में मालवी लोक कला तथा हस्तशिल्प हो प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करने में सहायता दी जाएगी

ललित कलाओं का दस्तावेज करण भी एक महत्वपूर्ण कार्य है इसे भी संपन्न किया जा सकता है

विद्यालय महाविद्यालय स्तर पर लोक कला का प्रशिक्षण देने की भी योजना बनाकर क्रियान्वित की जा सकती है

लोक कलाकारों को अपनी प्रस्तुति के लिए अवसर मिले इसलिए समय-समय पर आयोजनों में इन कलाकारों को अवसर प्रदान करने का विशेष आग्रह किया जा सकता है